~~वैदिक संस्कृति~~

मुगल साम्राज्य

Lecture given by -

Mamta Rani

Guest Assistant Professor

Deptt. of History.

SNSRKS College, Saharsa,

Bihar.

साम्राज्य निर्माण

अलाउद्दीन खिल्जी के अंतर्गत रणनीतिक विजयों का महत्व :-

उत्तर भारत :-

उत्तर भारत के संदर्भ में अलाउद्दीन खिल्जी ने सैनिक विजयों के साथ-साथ प्रत्यक्ष नियंत्रण की नीति अपनायी। इसने 1299 में गुजरात को जीतकर दिल्ली साम्राज्य में मिला लिया। गुजरात का व्यापक व्यापारिक महत्व था अतः गुजरात के बंदरगाहों पर कब्जा होने के पश्चात विदेश व्यापार को विशेष प्रोत्साहन मिला। इसी प्रकार 1301 में रणथम्भौर को जीतकर सल्तनत में शामिल कर लिया गया। फिर 1303 में चितौड़ पर कब्जा किया गया इसके अतिरिक्त 1305 में मालवा पर भी सल्तनत का अधिपत्य स्थापित हो गया। अन्त में 1308 में सिवाना और 1311 में जालौर आदि पर भी अधिपत्य स्थापित हो गया। इस प्रकार अलाउद्दीन खिल्जी ने उत्तर भारत में साम्राज्य निर्माण को पुनर्जीवित किया।

के लिए उसने कठोरतापूर्वक दरबारी औपचारिकताओं को लागू किया। उसी प्रकार रक्त और लौह की नीति का तीसरा पहलू था राजधानी के आस-पास तथा गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र में किलों का निर्माण कर उनपर सैनिकों को नियुक्त करना ताकि किसी भी विद्रोह की स्थिति के प्रति कार्यवाही की जा सके और अन्त में इस नीति का एक पहलू था कि उग्र दमन की ऐसी मिशाल कायम करना जिससे विद्रोह शब्द किसी की जुबान पर नहीं आ सके। बंगाल के मुक्ति तुगरील खान का उग्र दमन कर उसने यह मिशाल कायम की हालांकि यह सही है कि उसकी क्रूरता की नीति ने अमिरों एवं जनसामान्य के बीच भय का वातावरण निर्मित किया किन्तु इस नीति का क्रियान्वयन समय की जरूरत थी।

इस प्रकार बलबन ने एक कठोर शासन व्यवस्था का मॉडल स्थापित किया।

इल्तुतमिश तथा बलबन इन दोनों को दिल्ली सल्तनत के संगठनकर्ता के रूप में देखा जाता है। वस्तुतः मुहम्मद गोरी तथा कुतुबुद्दीन ने सल्तनत की आधारशिला रखी किन्तु इन दोनों के पास

चुनौतियों का सामना करना पड़ा था- दिल्ली के इर्द-गिर्द विद्रोही अमीरों का जमाव तथा राजनीतिक अस्थिरता, तुर्क-ए-चहलगानी की महत्वकांक्षा, कुछ राजपूत कुलीनों का विद्रोह आदि तथा रजिया ने एक-एक कर सभी का हल प्रस्तुत किया।

रजिया ने शक्ति और कूटनीति का उपयोग करते हुए विद्रोही अमीरों को दिल्ली से भागने के लिए विवश किया। फिर उसने यह महसूस किया कि तुर्की अमीर वर्ग के राजनीतिक एकाधिकार को तोड़ना आवश्यक है। इसलिए उसने याकूत और हसन गोरी जैसे गैर तुर्क अमीरों को भी प्रशासनिक सेवा में लिया। रजिया के समक्ष एक बड़ी चुनौती विद्रोही राजपूत अमिरों की भी थी, रजिया ने उसे दण्डित करने के लिए रणथम्भौर के किले को ध्वस्त किया। रजिया के इस कदम की सफलता का मुल्यांकन करते हुए समकालीन लेखक मिन्हाज ने भी स्वीकार किया है कि देवल से लेकर लखनौती तक मलिक एवं अमीरों ने उसके समक्ष सिर झुकाया।

किन्तु यह दूसरी बात है कि उसका यह समाधान स्थायी सिद्ध नहीं हुआ और इसका कारण था उसका स्त्री होना। मध्युगीन पुरुषवादी परिवेश में उसे प्रशासक के रूप में अस्वीकार कर दिया।